प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावषीलता, कार्य सन्तुष्टि एवं समायोजन का विष्लेषणात्मक अध्ययन

(डॉ.) अजय कुमार

प्रवक्ता
श्री बालाजी अकादमी मुरादावाद

सार:-

हमारे देश में अधीन अवधारणा रही है कि शिक्षक के गुण जन्मजात होते हैं, परन्तु आज जनसंख्या वृद्धि एवं शिक्षा प्रसार के साथ–साथ शिक्षको की बढ़ती मांग को जन्मजात शिक्षको द्वारा पूरा किया जाना सम्भव नही है। अतः प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक तैयार करने की आवश्यकता है। प्रत्येक देश का भविष्य उसकी आने वाली पीढ़ी पर निर्भर करता है तथा उसके स्वरूप को निश्चित करने की जिम्मेदारी शिक्षक पर होती है। कोठारी आयोग का मानना है कि ''भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'' प्रस्तुत शोध पत्र का लक्ष्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, कार्य सन्तुष्टि एवं समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

प्रस्तावनाः–

सामान्यतः अध्यापकों को गुरू कहा जाता है। माता–पिता को भी गुरू कहते हैं। वास्तव में गुरू शब्द का अर्थ है महान। महान वही है जो अपने को कृतकृत्य करके दूसरों को कल्याणकारी मार्ग का दर्शन कराता है। जब तक व्यक्ति स्वयं वीतरागी नहीं होगा तब तक वह दूसरों को सदुपदेश नहीं दे सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि गुरू जब मुख से उपदेश देवे तभी गुरू है अपितु गुरू वह है जो मुख से उपदेश दिये बिना भी अपने जीवन दर्शन द्वारा दूसरों को सन्मार्ग में लगा दे। गुरू ही तो सत्य से साक्षात् करवाने वाला, अज्ञान के अन्धकार को तार–तार करने वाला है। ज्ञान के भास्कर को उद्भावित करने वाला, नश्वरता, क्षणभंगुरता, सामयिकता की बेड़ियों में जकड़े मरदेह से हटाकर चिरंतन आत्मा की अनुभूति करवाने वाला होता है। वह गुरू ही था, यह गुरू ही रहेगा।

वह आहार, निद्रा, भय, मैथुन के अतिरिक्त भी कुछ करता है, कर सकता है और करना चाहता है। ऐसे मानव की पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो दिखता है उसके जीवन के तीन आधार स्तम्भ है, तीन अवलम्बन हैं माता, पिता और गुरू। माता–पिता जन्म देते हैं रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, वसा, चर्म, मेदा सप्त धातुओं से युक्त शरीर का निर्माण करते हैं और उस शरीर में अपने जाने–अनजाने में अनुवांशिकी गुणसूत्रों का सम्प्रेषण करते हैं। उसके चित्त में संस्कारों को संचालित करते हैं। लालन–पालन कर उसके अस्तित्व को सुनिश्चित करते हैं, उसे नाम देते हैं, परिचय देते हैं और मानव समाज में परिचित करवाते हैं, प्रवेश करवाते हैं और सबसे बड़ी बात उसे गुरू की शरण में पहुंचाते हैं। अब बारी आती है गुरू की। गुरू उसे उसकी पहचान देता है। भौतिक अथवा सांसारिक दृष्टि से वह शिष्य क्या है? क्या कर सकता है? उसकी क्या और कितनी क्षमता है? कैसी सामर्थ्य है? उसमें कौन–कौन सी योग्यतायें है? जो उसी के अनजाने में उसी में छुपी है.... इन सभी की पहचान गुरू ही तो करवाता है और फिर उसे एक परिवार की सीमा से निकालकर उसका अपना परिचय बनाने में, उसे प्रतिष्ठित होने में उन क्षमताओं और योग्यताओं को काम में लाने में उसका सहायक बनता है। संक्षेप में गुरू शिष्य को उसके लक्ष्य की पहचान कराता है और उस लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग भी बताता है। आधार–आचरण, चिंतन मनन आदि से शिष्य को दिशा–निर्देश देता है, उसका मार्गदर्शन करता है और जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों में संयम, धैर्य और साहस से कार्य करने का, परिस्थिति विशेष में संघर्ष

करने का मार्ग बताता है। गुरू का यह दिशा–निर्देश शास्त्रीय ज्ञान से, पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान से अधिक होता है, विलक्षण होता है, उपादेय और महत्वपूर्ण होता है। यह मात्र बौद्धिक विकास नहीं है, यह तो सम्पूर्ण व्यक्तित्व का गठन होता है, सच्चे अर्थों में शिष्य का पुनर्जन्म होता है और यही प्राचीन काल की द्विज बनने की प्रक्रिया थी।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व रू.

शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरु का सदैव महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में छात्र गुरु–गृहों में जाकर विधार्जन किया करते थे चाहे वैदिक काल हो, जैन धर्म, बौद्ध धर्म काल हो या फिर मुस्लिम काल। शिक्षक प्रत्येक काल में सम्मान जनक स्थान पर प्रतिष्ठित रहे है। समय चक्र की गति के साथ–साथ शिक्षा की सामाजिक मान्यताओं व अपेक्षाओं में व्यापक परिवर्तन हुयें हैं।

किसी राष्ट्र की मानव शक्ति की गुणवत्ता शिक्षा के स्तर से प्रभावित होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है। समय के साथ–साथ पुरातन सामाजिक व जीवन मूल्य सम्प्रति अपनी प्रसांगिकता खो चुके है। शिक्षक ने अपना गौरवशाली व्यक्तित्व खो दिया है। वह भी आज मजदूर की भाँति अर्थोन्मुखी हो गया है।

यदि सिक्के का दूसरा पहलू देखे तो हम पाते हैं कि औद्योगीकरण व वैश्वीकरण के रंग में रंगते जा रहे इस भौतिकवादी समाज में सम्मान जनक जीवन यापन हेतु शिक्षकों के दृष्टिकोण में बदलाव अप्रत्याशित नहीं है। इस स्थिति के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी स्वयं समाज ही है। समाज में भौतिकतावादी वृत्ति पनपते रहने का दुष्परिणाम यह है कि केवल धनोपार्जन को श्रेष्ठता मिल गयी है। अन्य विकासशील व विकसित देशों में शिक्षकों के वेतनमान व पदोन्नति के अवसर अन्य व्यवसायों की तुलना में बेहतर है। वहाँ शिक्षण को प्रतिष्ठा का व्यवसाय माना जाता है। समाज में शिक्षकों के प्रति आदर व सम्मान का वातावरण है, इसके विपरीत भारत में अध्यापकों के प्रति अनास्था, अनादर व अविश्वास की भावना बढ़ती जा रही है।'' असन्तुष्ट शिक्षक केवल अधकचरे ज्ञान से सरावोर विद्यार्थी ही उत्पन्न कर पायेगा जो राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जायेंगे। असन्तुष्ट शिक्षकों से छात्रों में मूल्यों, रूचियों, अभिवृत्तियों, आदतों एवं वैयक्तिक सामंजस्यशीलता के सृजन एवं विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

शोध अध्ययन का शीर्षकः–*''मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विषिष्ट बी॰टी॰सी॰ षिक्षकों की प्रभावषीलता, कार्य सन्तुष्टि एवं समायोजन का विष्लेषणात्मक अध्ययन''*

4.0 तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

- **प्राथमिक विद्यालयः** –सरकारी सहायता प्राप्त कक्षा एक से आठ तक के प्राथमिक व जूनियर विद्यालय जो बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित होते हैं।
- **बी॰टी॰सी॰:** –बी॰टी॰सी॰ धारी शिक्षकों से आशय उन शिक्षको से हैं जिन्होने स्नातक के बाद दो बर्षीय बी॰टी॰सी॰ की डिग्री प्राप्त की है।
- **विषिष्ट बी॰टी॰सी॰** –विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ धारी शिक्षकों से आशय उन शिक्षको से हैं जिन्होने स्नातक या परास्नातक के बाद एक वर्षीय बी॰एड॰ की डिग्री प्राप्त की है।
- **प्रभावषीलता** –प्रभावशीलता से आशय एक शिक्षक का शिक्षण में उचित प्रभाव, गुण आदि पैदा करने की क्षमता से है। एक प्रभावशाली शिक्षक अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

शिक्षण प्रभावशीलता का अभिप्रायः किसी अध्यापक की वह योग्यता है जिसके अन्तर्ग वह विद्यार्थियों में मौलिक कौशलों, समझ, तांछित आदतों, बांछित दृष्टिकोणों, मूलों को आंकने की योग्यता एवं समुचित व्यक्तित्व समायोजन के विकास में सहायता करता है। कोई भी अध्यापक विद्यार्थियों में जिस सीमा तक समुचित सर्वागीण विकास कर पाता है वह उतना ही अधिक प्रभावशील समझा जाता है। शिक्षण प्रभावशीलता की यापन कुंजी से शिक्षण प्रभावशीलता के माध्यम से ही अध्यापक की अध्यापन कुशलता आंकी जा सकती है।

शिक्षण प्रभावषीलता को प्रभावित करने वाले चर

प्रो0 एफ0डी0 स्टवेंग ने लिखा है कि– ''एक बुरा शिक्षक सत्य सिखाता है और एक अच्छा शिक्षक सिखाता है कि

उसको कैसे ज्ञात करें। ;A bad teacher teaches the truth, but a good teacher how to find it)प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एडम्स के अनुसार– ''शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है इसकी एक धुरी शिक्षक है और दूसरी धुरी विद्यार्थी। शिक्षक अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन और सुधार करता है और विद्यार्थी उसका अनुगमन करते हुए प्रभावित होता है। जॉन डीवी शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया मानते है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी तथा समाज तीनों अंगों में परस्पर आदान–प्रदान होता है। इस प्रकार शिक्षक शिक्षण–प्रक्रिया की एक धुरी है। शिक्षण व्यवसाय को प्रभावित करने वाले चार चर है।

❖ कार्य सन्तुष्टि –

''कार्य संतोष कर्मचारी की वह प्रवृत्ति है जो अनेक कारकों के साथ उसकी कार्य क्षमता को भी प्रभावित करती है, कार्य सन्तुष्टि ही एक ऐसी साधारण अनुभूति की अवस्था है जो कि व्यक्ति को अनुकूल उद्देश्य प्राप्ति के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित करती है, और स्वयं प्रेरित व्यक्ति अपने कार्य को इतनी अधिक संलग्नता के साथ करता है इसका अनुमान दूसरा कोई व्यक्ति नहीं लगा सकता।''एक बार अगर कोई व्यक्ति अपना कार्य का उद्देश्य निर्धारित कर लेता है तो फिर चाहे कुछ भी हो जाये उसे तब तक संतोष प्राप्त नहीं होगा जब तक कि उसका अपना उद्देश्य न मिल जाये, उद्देश्य प्राप्ति के उपरान्त ही उसको संतोष की प्राप्ति होती है। कार्य संतोष ही उसे अपने पेशे के प्रति नित्य निरन्तर प्रयास करने के लिए जागरूक बनाये रखता है, उसी से प्रेरित होकर वह अपने पेशे और अपने संगठन की उन्नति करने के लिए सक्षम सिद्ध हो सकता है। पेशे के प्रति सन्तुष्टि का प्रचलित और निश्चित अर्थ जानने से पहले हमें यह देखना होगा कि कोई भी व्यक्ति कार्य क्यों करता है? वह अपने पेशे से क्या चाहता है? क्या केवल धन कमाना ही उसका मुख्य उद्देश्य है? या फिर पेशे से वह प्रवृत्ति या उस उद्देश्य की पूर्ति कर पाता है जिसके बाद उसको अपने पेशे से असंतुष्टि या मजबूरी प्रतीत न हो।मानव मात्र की यह एक निश्चित प्रवृत्ति है कि जब तक वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति न कर लें या अपने पेशे से पूर्ण संतोष प्राप्त न कर लें तब तक उसको मानसिक शान्ति नहीं मिल पाती। अपनी मजबूरी के कारण भले ही उसको वह कार्य में असमर्थता हो ऐसी स्थिति में वह मानसिक रूप से पूरी तरह उस पेशे से नहीं जुड़ पाता यही एक ऐसा महत्वपूर्ण तत्व है जो कि किसी संगठन की अवनति का प्रथम कारक होता है। पेशे के प्रति सन्तुष्टि की निश्चित परिभाषा में अब तक मतभेद हैं, सभी मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने अध्ययन अनुभवों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। **अध्ययन के उद्देश्य :. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विषिष्ट बी॰टी॰सी॰ षिक्षकों की प्रभावषीलता का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक करना।**

1. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक करना।
2. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ शिक्षकों के समायोजन का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ शिक्षकों की प्रभावशीलता में लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ शिक्षकों के समायोजन में लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन विधिः–किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक ढंग से पूर्ण करने के लिए अनुसंधान की विधि की आवश्यकता होती है। अनुसन्धान विधि का निर्धारण समस्या के स्वरूप व प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रस्तावित शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित लगेगा इसलिए शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग इस अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्याः–प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत मुरादाबाद मण्डल के पांच जिलो के शिक्षक–प्रशिक्षक संस्थानों में स्थित शिक्षक–प्रशिक्षक महाविद्यालयों को सम्मलित किया जायेगा ।

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विष्ष्टि बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों की प्रभावषीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष षिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
बी0टी0सी0	100	176.22	21.63	1.59	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
विशिष्ट बी0टी0सी0	100	179.71	19.17		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :–

तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों की प्रभावशीलता को दर्शाया गया है। तालिका में प्राथमिक विद्यलयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन 176.22 एवं 21.63 प्राप्त हुआ है जबकि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः179.71 एवं 19.17 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.59 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

ग्राफ संख्या – 1

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों की प्रभावषीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

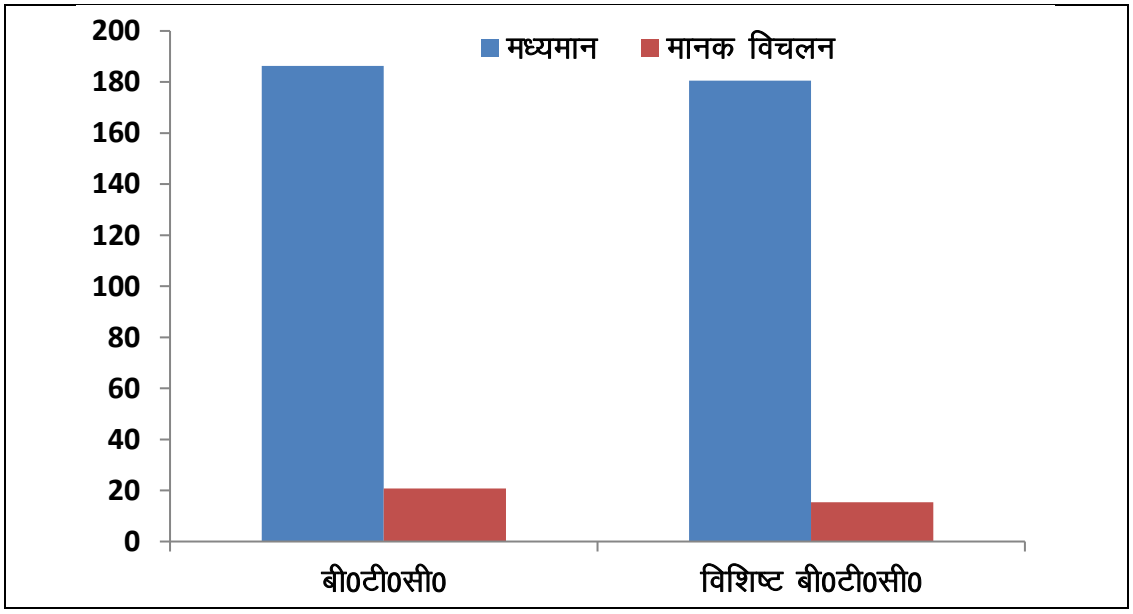

तालिका संख्या –2

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष षिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
बी0टी0सी0	100	178.19	21.37	1.54	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
विशिष्ट बी0टी0सी0	100	184.33	16.86		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :–

तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि को दर्शाया गया है। तालिका में प्राथमिक विद्यलयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन 178.19 एवं 21.37 प्राप्त हुआ है जबकि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 184.33 एवं 16.86 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.54 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

ग्राफ संख्या –2

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

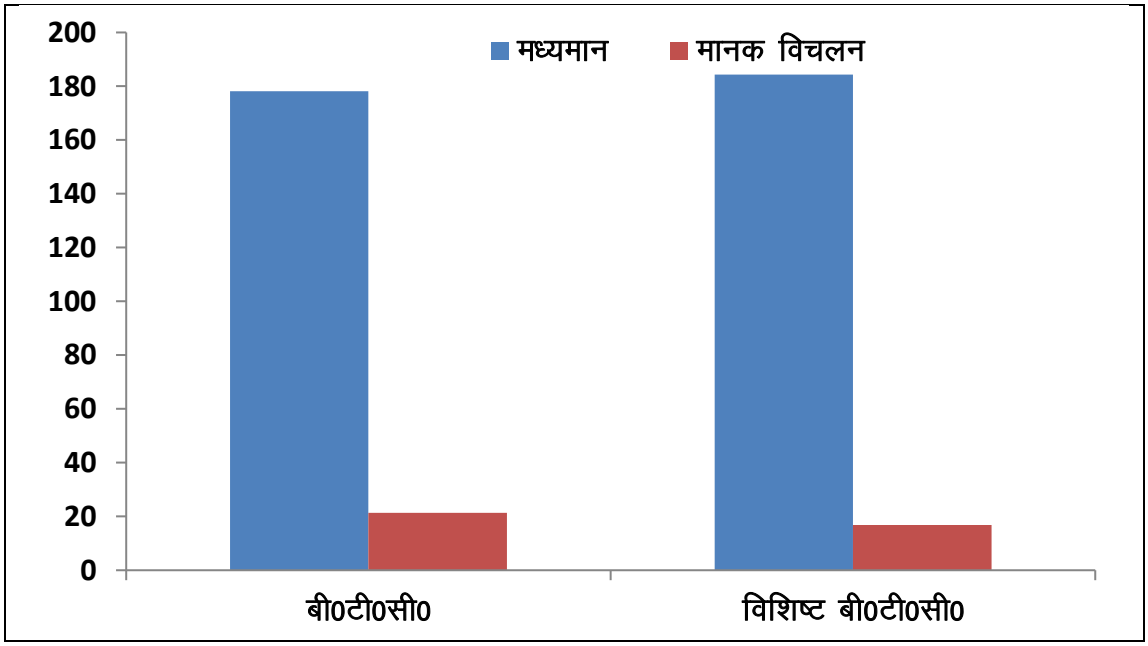

तालिका संख्या –3

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

पुरूष षिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
बी0टी0सी0	100	54.53	14.12	1.40	0.05 = 1.96

विशिष्ट बी0टी0सी0	100	52.60	13.64		0.01 = 2.59

0.01 सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :–

तालिका संख्या 3 में मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों के समायोजन को दर्शाया गया है। तालिका में प्राथमिक विद्यलयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन 54.53 एवं 14.12 प्राप्त हुआ है जबकि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 52.60 एवं 13.64 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 1.40 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी॰टी॰सी॰ एवं विशिष्ट बी॰टी॰सी॰ पुरूष शिक्षकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

ग्राफ संख्या –3

मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरूष षिक्षकों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विष्लेषण एवं व्याख्या

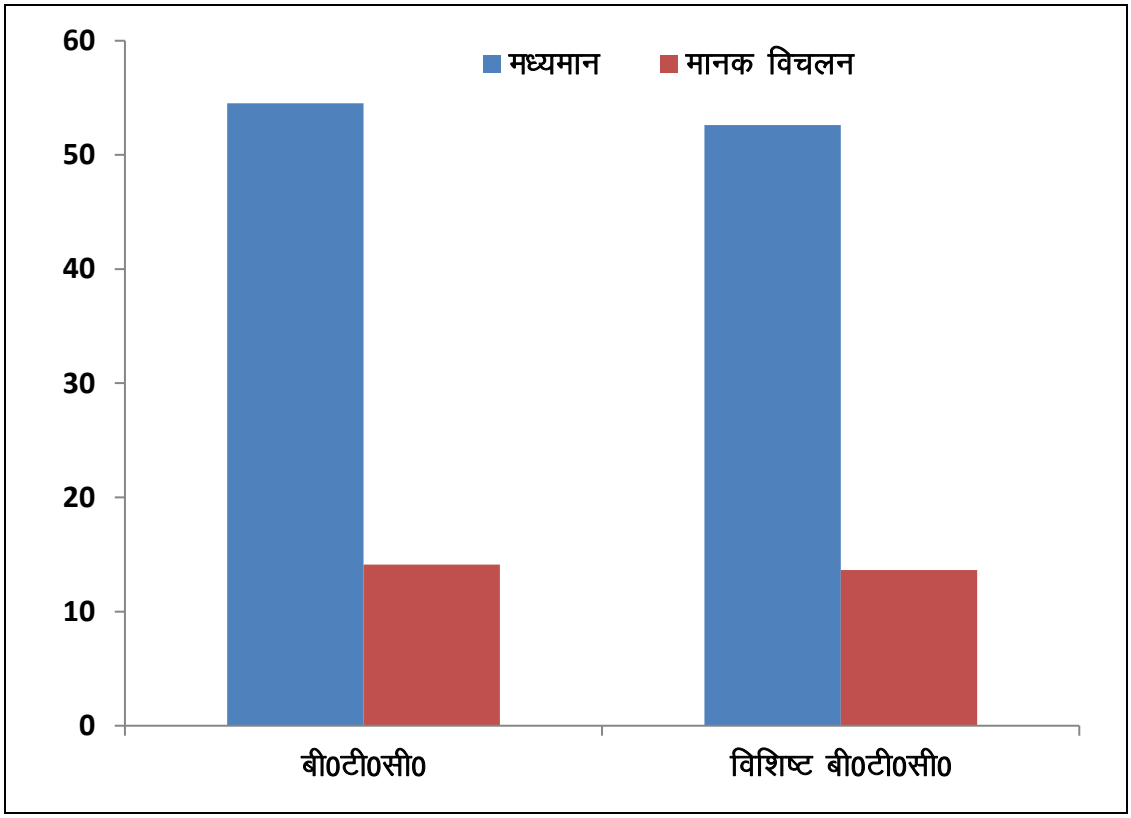

–: संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1ण अशहर, तौसीफ (2015) : ''प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'', शोध पत्र (शिक्षा शास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, अमरोहा।

2ण अग्रवाल, सुभाष (2004) : अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा चिन्तन, शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, वर्ष–12, अंक–45, एम0आई0एस0बी0, सी–73,सेक्टर 63,नोएडा–201301.

3ण अंकुर सिंह : ''किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका'' पी–एच.डी. सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय. कानपुर, 2005 पृष्ठ 61–63।

4ण अधिएम्बो, डब्ल्यू. एम.; ओडवार, ए. जे. और मिल्ड्रेड, ए. (2011) : 'दा रिलेशनशीप अमंग स्कूल एडजस्टमेंट, जेण्डर एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट अमंगरेस्ट सैकण्डरी स्कूल स्टूडेण्टस् इन किसुमु डिस्ट्रिक्स,' रिसर्च आर्टिकल, जर्नल ऑफ एमरजिंग ट्रेन्डस, इन एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड पॉलिसी स्टडीज, 2011, वॉल्यूम 2(6), पृ. 493–497

5ण अल्लाही (2014) : ''ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमी अचीवमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेण्टस्', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इन्टर डिसिप्लनरी रिसर्च, वॉल्यूम 1, नवम्बर 5, मई 2012, पृ. 64–67.

6ण आर.ए. शर्मा : शिक्षा एवं मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी, आर0लाल0 बुक डिपों मेरठ.

7. ओंसिकर, प्रतिभा (1996) : ''स्टडी द जॉव सैटिसफैक्शन अमंग टीचर्स वार्किंग इन गर्वनमेंट एण्ड प्राईवेट सेकेण्डरी स्कूल्स'' दि प्रोग्रेस ऑफ एज्यूकेशनल, वॉ LXXI(3), 50–53, इंडियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट, 4, जनवरी 1998

8ण एफ0एन0 करलिंगर : फाउंडेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च, न्यूयार्क, हॉल्ड रिनीहार्ट एण्ड विलसन, 1959.

9ण ऊषा, रानी (2013) : ''विवेकानन्द विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी के प्रति सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'', पी–एच0डी0 (वाणिज्य), तिरुचनापल्ली विश्वविद्यालय, तमिलनाड,

10ण ऊषा, पी. (2007) : ''इमोशनल एडजस्टमेंट और फैमिली एक्सेप्टेंस ऑफ दाचाइल्ड : कोरेलेटेडस् फॉर अचीवमेंट'', एज्यूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद, वॉल्यूम 6, नम्बर 10, जून 2007, पृ. 25–27.

11ण कक्कर, वेद (1983) : ''कार्यशील महिलाओं की अभिवृत्ति, मूल्य, व्यवसायिक रूचि का उनकी कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन'', पी0एच0डी0 (मनोविज्ञान), डॉ वी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय,

आगरा।

12ण केवट, आर0, एन0, 13ण: 14ण समेकित षिक्षा के अन्तगर्त सामान्य एवं विषेष विद्यालयों में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16 अंक 1, अप्रैल 2009 पृष्ठ–109–14.